AFRICA KI LOK-KATHEY



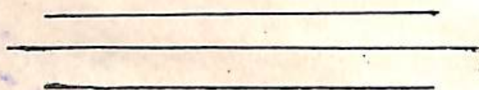
अफ्रीका की लोक-कथाएं

प्रियदर्शी प्रकाश



अफ्रीका की लोक-कथाएं





- प्रथम संस्करण : 1980
- मूल्य : पांच रुपये
- नालंदा प्रकाशन
  ३३/१ भूलभुल्लैंया रोड, महरौली
  नई दिल्ली-११००३०
- एस० एन० प्रिंटर्स द्वारा कमलेश प्रिंटरी में मुद्रित

AFRICA KI LOK-KATHAYEN (Folk Tales of Africa):
by Prya Darshi Prakash Rs. 5.00

अफ्रीका की लोक-कथाएं

प्रियदर्शी प्रकाश



नालंदा प्रकाशन
३३/१ महरौली, नई दिल्ली-११००३०

कथा-क्रम



सार्थक ज्ञान ५
नेकी का बदला १०
आलसी मुखिया १५
घमण्ड का नतीजा १९
भय का कारण २३
भगवान जो करता है २७
खुशामदियों का अंत ३१
अनोखा न्याय ३५
साहसी शिकारी ३९
जनता का राजा ४५
बुराई का बदला नेकी ५०

रौंडा-उरूंडी की लोककथा

रौंडा-उरूंडी में बाहूतू, बातवा तथा वातूसी आदिवासी रहते हैं। हालांकि देश की आबादी में बाहूतू की संख्या अधिक है, (लगभग ९० प्रतिशत), फिर भी शासन वातूसी अल्पसंख्यकों के हाथ में है। रौंडा-उरूंडी में दो विश्वविख्यात झीलें हैं: 'लेक तांगानायिका' तथा 'लेक विक्टोरिया'। यह देश किसी जमाने में बेल्जियम के अधीन था। इसकी राजधानी उस्रमबुरा है। यह देश आजकल 'युनाइटेड नेशन्स ट्रस्ट' के अधीन है। यह २०,५४० वर्गमील में फैला है। यहां की कुल आबादी ४६,३०,००० है।

प्रस्तुत कहानी रौंडा-उरूंडी के दक्षिणी इलाके में अधिक लोकप्रिय है।



सार्थक ज्ञान

रौंडा-उरूंडी के सीमावर्ती इलाके में तांगानायिका नामक विशाल झील है।

किसी जमाने में उस झील में वातुसी नामक मल्लाह अपनी नौका से गांव वालों को दारेस्सलाम पहुंचाया करता था। एक दिन सुबह से बरसात हो रही थी और तेज हवा बह रही थी। बड़े-बड़े वृक्ष लहरा रहे थे और झील का पानी उफन रहा था। ऐसी हालत में वातुसी ने अपनी नाव एक पेड़ से बांध दी और झोंपड़ी में जाकर आराम करने लगा। ऐसे भयंकर तूफान में नौका चलाना खतरे

से खाली नहीं था।

तभी गांव का पुरोहित बहूतु झील के किनारे पहुंचा। उसे किसी भी हालत में दारेस्सलाम पहुंचना था, जहां से उसे न्योता मिला था। झील के किनारे मल्लाह को न देखकर वह उसके झोंपड़े में गया। झोंपड़े में वातुसी आराम से लेटा हुआ था।

पुरोहित ने उससे कहा, 'भाई, मुझे झील के उस पार पहुंचा दो, बहुत जरूरी काम है।'

वातुसी बोला, 'पर पुरोहित जी, इस तूफान में नौका चलाना समझदारी नहीं है। बीच झील में अगर नौका उलट गई तो जान के लाले पड़ जाएंगे।'

बहूतू पुरोहित बहुत ही लालची था। उसने सोचा, अगर वह जजमान के पास न पहुंचा तो बिलावजह नुकसान हो जाएगा। उसने कहा, 'पुरोहित की बात मानोगे तो पुण्य होगा। नौका में मेरे रहने से तुम्हारा कोई अनिष्ट नहीं होगा। चलो, जल्दी करो। मुझे देर हो रही है।'

वातुसी भोला-भाला था। वह जल्दी ही पुरोहित की बातों में आ गया। उसने उठकर कहा, 'महाराज, आपकी बात तो ठीक है। पर कुछ हो गया तो मुझे दोष मत दीजिएगा।'

'तुम निश्चित रहो। कुछ नहीं होगा।'

अब मल्लाह को अपने पारिश्रमिक की चिंता हुई। बोला, 'आप देख रहे हैं कि बरसात हो रही है और तूफान चल रहा है। फिर भी मैं आपको झील के पार पहुंचा दूंगा। पर मुझे मिलेगा क्या ?'

पुरोहित एक ही धूर्त था। वह बोला, 'अरे भाई, पुरोहित के पास ज्ञान के अलावा तो कुछ और होता नहीं। मैं तुम्हें ज्ञान की दो-चार बातें बताऊंगा, तुम्हारा जीवन सुखी हो जाएगा।'

वातुसी को पुरोहित की बात जंची नहीं। लेकिन वह कुछ बोला नहीं। वह जानता था कि पुरोहित लोग जादू-टोना जानते हैं। अगर उसने कोई चूं-चपड़ की तो वह मंत्र फूंककर उसे कहीं का नहीं छोड़ेगा। लेकिन अगर वह उसे झील के उस पार पहुंचा देगा तो हो सकता है कि वह उसकी जिंदगी संवार दे। वह

पुरोहित के साथ झोंपड़े के बाहर निकला और अपनी नौका खोल डाली। पुरोहित खुश होकर नौका पर बैठ गया। वातुसी नौका खेने लगा। हालांकि बरसात और तूफान की वजह से नौका जोरों से हिल रही थी, लेकिन वातुसी बहुत कुशल मल्लाह था, इसलिए वह सतर्कता से नौका खे रहा था। जब बीच झील में नौका पहुंची तो वातुसी बोला, 'महाराज, अब किनारा आने वाला है, आप ज्ञान की बातें सुनाइए।'



पुरोहित चकरा गया। उसने तो यों ही मल्लाह को धोखा देने के लिए ज्ञान की बातें सुनाने का वायदा किया था। वह सिर खुजलाने लगा। फिर कुछ

सोचकर बोला,' क्यों भाई, तुम परमेश्वर का नाम जपते हो ?'

वातुसी ने उत्तर दिया, 'दिन-रात नौका चलाने से ही फुरसत नहीं मिलती, तो परमेश्वर का नाम कैसे जपूं ?'

'तब तो तुम्हारा सारा जीवन ही व्यर्थ है। तुमने अपनी जिन्दगी का एक-तिहाई भाग बरबाद कर दिया।'

वातुसी चिन्ता में पड़ गया। पुरोहित ने फिर पूछा, 'तुम्हें कुछ हिसाब-किताब करना आता है ?'

'नहीं।'

पुरोहित ने फौरन कहा, 'ओहो ! इसका मतलब तो यह हुआ कि तुमने अपनी जिन्दगी का एक-तिहाई भाग और बरबाद कर दिया। अब बाकी की जिन्दगी को संवारना तो मुश्किल है।'

वातुसी समझ गया कि पुरोहित को ज्ञान की कोई बात नहीं आती और वह सिर्फ उसे बेवकूफ बना रहा है। वातुसी ने कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप नौका खेने लगा। पुरोहित की बातों ने उसे बड़ी ठेस पहुंचाई थी इसलिए उसका मन विचलित था। अचानक पानी का एक तेज झोंका उठा और वातुसी की नौका थपेड़े खाने लगी। वातुसी ने बहुत प्रयास किया कि नौका को ठीक से खे चलें, लेकिन उससे नौका संभल न सकी और उलट गई। पुरोहित की डर के मारे हालत खराब हो गई। वह 'बचाओ-बचाओ' चीखने लगा।

वातुसी तो पहले ही पुरोहित से जला-भुना बैठा था, उसकी चीखें सुनकर वह और झल्ला गया। अब उसे पूरी तरह विश्वास हो गया कि पुरोहित को कुछ आता-जाता नहीं, वह यों ही अपनी पंडिताई झाड़ रहा था। वातुसी तैरने में निपुण था। वह तैरकर पुरोहित के पास पहुंचा और बोला, 'महाराज, आपको तैरना आता है कि नहीं ?'

पुरोहित ने घबराहट में उत्तर दिया, 'नहीं।'

अब वातुसी को जवाब देने का अच्छा मौका मिला। बोला, 'तब तो आपकी सारी जिन्दगी बरबाद होने का वक्त आ गया।'

पुरोहित बुरी तरह घबरा गया। वह मल्लाह से याचना करने लगा कि किसी तरह उसे किनारे तक पहुंचा दे। उसने मल्लाह को उचित पारिश्रमिक देने का भी वायदा किया।

वातुसी ने उसे किनारे तक पहुंचा दिया। पुरोहित ने उसे पारिश्रमिक दे दिया। जब वह जाने लगा तो वातुसी ने उससे कहा, 'निरर्थक ज्ञान की बातों से कुछ आता-जाता नहीं। सबसे बड़ा ज्ञान तो वह है, जिससे किसीकी जान बचाई जा सके।'

बहूतु ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके पास कहने को था ही क्या ?

सूडान की लोककथा

सूडान दो अरब मुल्कों —मिस्र और इथोपिया से लगा हुआ देश है। इसकी अधिसंख्य आबादी मुस्लिम धर्मावलंबी है। सूडान पर अफ्रीका से अधिक अरब देशों का प्रभाव है। यह देश सन् १९५६ में विदेशी शासन से मुक्त हुआ था। इस देश की राजधानी खारतूम है। सूडान ९,६७,५०० वर्गमील में फैला हुआ है। इसकी जनसंख्या १०,०००,००० है।

'नेकी का बदला' कहानी सूडान की प्रसिद्ध लोककथा है।



नेकी का बदला

सूडान के खारतूम शहर में फजल इलाही नामक एक बहुत बड़ा सौदागर रहता था। उसके पास अनेक जहाज थे, जो लाल सागर को पारकर विभिन्न देशों में जाकर व्यापार करते थे। जहाजों के अलावा उसके पास ऊंट भी थे। ऊंटों से वह मैदानी इलाकों में व्यापार करता था।

सौदागर बहुत ही भला और अच्छे स्वभाव का था। आज तक उसे क्रोध करते किसी ने नहीं देखा था। दया और स्नेह की भावना उसमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। अपने नौकरों तथा कर्मचारियों से भी उसका व्यवहार बड़ा मधुर था। इसके अलावा वह दानी भी था। उसके दरवाजे पर अगर कोई साधु-फकीर पहुंच

जाता तो वह कभी भी खाली हाथ नहीं लौटता था। अपने परिश्रम तथा अच्छे व्यवहार के कारण उसका व्यापार उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा था। लक्ष्मी उसपर बरस रही थी।

पांच वर्ष पहले जब फजल इलाही खारतूम आया था, तब वह सिर्फ फजलू था। उसकी हालत इतनी खराब थी कि दो टुकड़े रोटी के भी नसीब नहीं होते थे। नया-नया देश था। उसकी जान-पहचान किसीसे भी नहीं थी। वह दो दिन तक खारतूम की गलियों में भूख-प्यास से मारा-मारा घूमता रहा। हालांकि वह किसीके आगे हाथ नहीं फैलाना चाहता था, मगर जब भूख से उसकी हालत बिगड़ गई तो उसे मजबूरन एक घर का दरवाजा खटखटाना पड़ा। दरवाजा घर के मालिक ने खोला तो फजल इलाही ने खाने की याचना की।

फजल की याचना सुनकर मकान-मालिक को आश्चर्य हुआ। फजल शक्ल-सूरत से अच्छा-भला लग रहा था। भिखारी-जैसा तो वह किसी भी हालत में नहीं लग रहा था। मकान-मालिक एक क्षण न-जाने क्या सोचता रहा, फिर उसे ठहरने का संकेत करके अन्दर गया। फजल को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। शीघ्र ही मकान-मालिक एक रकाबी में दो रोटियां और खजूर का गुड़ ले आया। फजल को बड़ी तेज भूख लगी थी। उसने खाने की सामग्री ले ली और वहीं बैठकर खाने लगा।

मकान-मालिक हैरानी के साथ उसे देख रहा था। जब फजल ने खाना खा लिया तो मकान-मालिक अपनी उत्सुकता दबा न सका। उसने फजल को सारी कैफियत सुनाने को कहा। फजल के पास सुनाने को था ही क्या? उसने अपनी गरीबी की कहानी दो शब्दों में बयान कर दी। मकान-मालिक बड़ा द्रवित हुआ। उसकी नगर में एक छोटी-सी दुकान थी। उसने फजल को रोटी-कपड़े के बदले अपने यहां नौकर रख लिया।

वह परिश्रम से काम करने लगा। उसकी मेहनत, लगन और बुद्धिमत्ता देखकर मालिक को बड़ी प्रसन्नता हुई। थोड़े दिनों में उसने फजल को छोटी-मोटी तनख्वाह देना भी आरम्भ कर दिया। फजल वेतन के पैसे बहुत सोच-समझकर

खर्च करता। इसका नतीजा यह हुआ कि उसके पास थोड़ा-बहुत धन एकत्र होने लगा। जब उसके पास अच्छी-खासी पूंजी जमा हो गई तो उसने नौकरी छोड़ दी।

अब उसने छोटी-मोटी सौदेबाजियां करनी शुरू कर दीं। हर सौदेबाजी से उसे कुछ-न-कुछ लाभ होता। थोड़े अरसे में ही वह नगर का अच्छा खाता-पीता नागरिक बन गया। अब खारतूम शहर के निवासी उसे फजल इलाही के नाम से पुकारने लगे।

अब हालत यह हो गई थी कि वह सूडान के प्रभावशाली व्यापारियों में से एक था। देश-विदेश में उसका व्यापार फैला हुआ था।

एक दिन की बात है। फजल इलाही शाम के वक्त अपनी हवेली के बाहरी हिस्से में बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। एकाएक उसकी नजर मुख्य दरवाजे पर गई। वहां एक आदमी चौकीदार से कुछ निवेदन कर रहा था। फजल इलाही को वह आदमी परिचित-सा लगा। लेकिन उसे याद नहीं आया कि उसे कहां और कब देखा है। उसने दिमाग पर काफी जोर दिया, पर उस आदमी की तस्वीर नहीं उभरी। फजल इलाही ने अपने चौकीदार को आवाज देकर अन्दर बुलाया।

चौकीदार फौरन पास आ गया। फजल इलाही ने पूछा, 'कौन है यह आदमी ? क्या चाहता है ?'

'वह आपसे मिलना चाहता है। कोई जरूरतमंद है।'

फजल इलाही ने हुक्के के दो-तीन कश खींचकर कहा, 'ठीक है, उसे यहां भेज दो।'

वह आदमी पास आया तो फजल ने पूछा, 'कहां से आ रहे हो, भाई ?'

'खारतूम के दक्षिण से।'

'दक्षिण से ?' फजल ने चौंककर कहा। उसे अपने पुराने दिन याद आ गए, जब वह गरीबी में भटकता था। उसने पूछा, 'यहां कैसे आए हो ?'

'वहां मैं एक सौदागर के यहां नौकर था। एक दिन उनका काफिला डाकुओं ने लूट लिया। सौदागर एकदम कंगाल हो गया। उसने खारतूम का दक्षिणी इलाका छोड़ दिया और न-जाने कहां चला गया। उस दिन के बाद मैं भी बेकार

हो गया और दर-दर भटकने लगा।'

'मेरे पास क्यों आए हो ?'

'आपकी बड़ी तारीफ सुनी है। लोग कहते हैं, आपके यहां हर मुराद पूरी हो जाती है।'

फजल ने मन-ही-मन में सोचकर कहा, 'तुम्हारी क्या मुराद है ?'

'मालिक, मैं बड़ा मेहनती हूं। पुराना मालिक भी मेरे काम से बड़ा खुश था। आप कोई काम दे दीजिए, बस, यही मेरी मुराद है।'

'हूं ! कौन-सा काम जानते हो ?'

'बढ़िया-बढ़िया खाना बनाकर खिलाना।'

'ठीक है, तुम हमारे यहां काम पर रखे जाते हो।'

उसका नाम ऐतमाद था। उस दिन से वह फजल इलाही के यहां नए-नए पकवान बनाता और बड़े प्रेम से अपने मालिक को खिलाता। खाना खिलाते समय वह आस-पास किसीको फटकने नहीं देता था।

एक दिन फजल इलाही खाना खा रहा था। पास ही ऐतमाद उसकी सेवा में खड़ा था। अचानक बाहर से कोई फकीर गुहार मचाने लगा। ऐतमाद ने फौरन खिड़की बन्द कर दी, ताकि फकीर की आवाज से मालिक के खाने में किसी प्रकार का विघ्न न पड़े।

फजल इलाही ने पूछा, 'खिड़की क्यों बन्द कर दी ?'

'हुजूर, बाहर कोई फकीर खड़ा है। ये लोग खाने के समय ही आ मरते हैं। आप खाना आरंभ कीजिए।'

फजल ने एक रकाबी में दो रोटियां और थोड़ा शोरबा डालकर ऐतमाद को दिया और कहा कि पहले फकीर को खिलाओ।

ऐतमाद मुंह बनाकर रकाबी के साथ बाहर चला गया। लेकिन थोड़ी देर में वह वापस आ गया और बोला, 'मालिक, फकीर और कोई नहीं, मेरा पुराना मालिक है।'

'तो उसे इज्जत के साथ यहां लाओ।' फजल ने कहा।

ऐतमाद अपने पुराने मालिक को अंदर लाया। फजल ने पास में बिठाकर उसे खिलाया-पिलाया। खाने-पीने के बाद वे दोनों हुक्का खींचकर बैठ गए। फजल बोला, 'मुझे खारतूम का दक्षिणी इलाका आज भी याद है।'

'वहां आप क्या करते थे?' मेहमान ने पूछा।

'मैं गरीबी की हालत में वहां गया था। मेरा कोई नहीं था। मैं भूख से बेहाल था। जब हालत बदतर हो गई तो मुझे मजबूरी में वह करना पड़ा जो मैं नहीं करना चाहता था। यानी एक दरवाजे पर भीख मांगने पहुंच गया। मकान-मालिक कोई दयालु आदमी था, उसने न सिर्फ मुझे भर-पेट खिलाया-पिलाया, बल्कि अपने यहां नौकर भी रख लिया। उसकी दया से आज मैं सौदागर बना हूं।'

मेहमान गौर से उसे देखने लगा। उसकी आंखों में चमक आ गई। लेकिन मुंह से कुछ नहीं बोला। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद मेहमान ने रुख्सत मांगी।

फजल इलाही ने मुस्कराकर कहा, 'यह कैसे हो सकता है? आपको मैं यहां से कभी जाने नहीं दूंगा।'

मेहमान ने चौंककर फजल इलाही की ओर देखा।

फजल इलाही बोला, 'मैं आपको देखते ही पहचान गया था। जिस आदमी ने मुझे भूख और गरीबी में सहारा दिया था, उसे मैं कैसे भूल सकता हूं! आज आपकी दया से मेरे पास सब-कुछ है। यह सब आपका दिया हुआ है। अगर आपकी इस हालत में मैं आपके किसी काम न आया तो मेरी जिंदगी व्यर्थ है।'

मेहमान की आंखों से आंसू बहने लगे।

फजल बोला, 'आपके अहसानों का बदला तो मैं नहीं चुका पाऊंगा, लेकिन आज से आप मेरे घर पर रहेंगे। मेरे मां-बाप बचपन में मुझे छोड़ गए थे। आज से आप मेरे बाप बनकर यहां रहेंगे।'

मेहमान ने फजल को गले से लगा लिया। बोला, 'फजलू, तू महान है। तूने मुझे खरीद लिया।'

●●

केन्या की लोककथा

केन्या 'विक्टोरिया लेक' के किनारे बसा एक भव्य देश है। यह अनेक राष्ट्रों से घिरा हुआ है। एक तरफ अरब देश इथोपिया की सीमा लगती है, तो बाकी भागों में सोमालिया, युगांडा, तंगानायिका आदि देशों की सीमाएं हैं। केन्या की राजधानी का नाम नैरोबी है। यह पहले ब्रिटिश कालोनी थी। अब आजाद राष्ट्र है। यह २,२४,६६० वर्गमील में फैला हुआ है। यहां की जनसंख्या ६,५००,००० है।

'आलसी मुखिया' केन्या की प्रसिद्ध लोककथा है।



आलसी मुखिया

आज से अनेक वर्ष पहले जांबेजी नदी के किनारे एक कबीला था। कबीले के लोग जंगलों में जानवरों और नदी में मछलियों का शिकार करके अपना जीवन-निर्वाह करते थे।

कबीले के मुखिया का नाम था बांगुई। वह बहुत ही स्वार्थी और कपटी था। उसने नदी के पास ही लकड़ियों का एक ऊंचा बंगला बना रखा था और शान से उसमें रहता था। कबीले के लोग उससे डरते थे। वह उनसे खूब काम लेता और जो कोई उसकी बात नहीं मानता, उसे बेरहमी से मारता-पीटता था। वह विलासी था। उसे खाना-पीना और ठाठ-बाट से रहना पसंद था। लेकिन काम के नाम पर उसकी जान निकलती थी। हर समय वह अपनी

अट्टालिका में पड़ा रहता। उसे अपने कबीले वालों की जरा भी चिन्ता न थी। वह कभी कबीले-वासियों के दुख-दर्द में शामिल नहीं होता था, न ही वह उनकी परेशानियों को दूर करने के उपाय सोचता था।

ऐसे मुखिया से कबीले वाले दुखी थे, लेकिन कोई कुछ बोलता नहीं था। मुखिया के पास कई कर्मचारी थे। जो कबीला-वासी मुखिया के खिलाफ कुछ बोलता, वे उसे खूब पीटते थे। कबीले वाले इस अत्याचार को सहते रहते। लेकिन कबीला छोड़कर कहीं नहीं जाते। वे सब कबीले में पीढ़ी-दर-पीढ़ी रहते आ रहे थे। कबीले को छोड़कर दूसरे कबीले में जाकर रहना उनके धर्म के विरुद्ध था। वे मन मारकर उसी कबीले में रहते थे और भगवान से मनाते थे कि ऐसे क्रूर मुखिया से उन्हें निजात दिलाए।

आखिर भगवान ने एक दिन उनकी सुन ली।

एक बार उस इलाके में बेहद बरसात हुई। जांबेजी नदी में पानी भर गया और भीषण बाढ़ का खतरा उपस्थित हो गया। नदी का पानी बुरी तरह से कगार तोड़कर कबीले के चारों ओर बहने लगा। लोग घबरा कर इधर-उधर भागने लगे। सभी अपनी जान बचाने के चक्कर में पड़ गए। लोग दौड़े-दौड़े मुखिया के पास पहुंचे। मुखिया अपनी अट्टालिका में आराम कर रहा था। उसने बाहर इतनी भीड़ देखी तो बुरा-सा मुंह बनाकर बोला, 'क्या बात है? इतना शोर क्यों मचा रखा है?'

कबीले के वृद्ध सज्जन ने विनम्रता से कहा, 'देवता, नदी की बाढ़ से हमारा कबीला डूब रहा है। आप कर्मचारियों को नदी में बांध बनवाने की आज्ञा दे दीजिए, ताकि हमारा कबीला बच जाए।' बांगुई ने लापरवाही से उत्तर दिया, 'मुझे क्या गरज पड़ी है? मेरा घर तो मजबूत है। नदी की बाढ़ मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। तुम लोग अपनी रक्षा आप करो।'

बेचारे कबीला-वासी निराश होकर लौट गए।

इधर नदी का पानी उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। जब पानी मुखिया के घर की पहली मंजिल छूने लगा तो वह दूसरी मंजिल पर आ गया। उसे

अपने घर पर भरोसा था। वह सोच रहा था कि पानी का वेग उसके घर का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। पर पानी धीरे-धीरे बढ़ने लगा। मुखिया के चाटुकार कर्मचारी दौड़े-दौड़े उसके पास पहुंचे और बोले, 'हे देवता, पानी तो बराबर बढ़ता जा रहा है। अब क्या होगा ?'

'चिंता मत करो। मेरा घर तीमंजिला है। अगर पानी दूसरी मंजिल तक आ जाएगा तो मैं ऊपर की मंजिल में चला जाऊंगा।' बांगुई ने गर्व से उत्तर दिया।

लेकिन पानी अट्टालिका की जड़ खोदने लगा। बांगुई का मकान हिलने लगा। अब उसका दिल घबराने लगा। वह दौड़कर खिड़की के पास पहुंचा। चारों ओर पानी ही पानी था। कबीले के निवासी लकड़ी के बड़े-बड़े तख्तों पर बैठकर अपनी जान बचाते फिर रहे थे। बांगुई को खतरा स्पष्ट नजर आने लगा। उसने तत्काल अपने कर्मचारियों को नदी पर बांध बांधने की आज्ञा दी।

मुट्ठी-भर कर्मचारी अकेले तो कुछ कर नहीं सकते थे। वे कबीला-वासियों के पास गए और बांध बांधने के काम में उनकी सहायता मांगी। पर किसी ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वे समझ गए कि जब मुखिया पर संकट आया, तभी उसे बांध की याद आई है। उन्होंने कर्मचारियों से साफ कह दिया कि यह मुसीबत मुखिया ही लाया है, अब उसे ही भुगतने दो! अगर उसने शुरू में ही नदी पर बांध बंधवाया होता तो यह मुसीबत क्यों आती।

कर्मचारी अपना-सा मुंह लेकर मुखिया के पास चले गए। मुखिया सिर पीट कर रह गया। उसने खुद ही चिल्ला-चिल्लाकर लोगों से सहायता मांगी, पर किसीने उस पर ध्यान न दिया।

लोगों ने कहा, 'हम तो इस बाढ़ में डूबेंगे ही, लेकिन तुम भी बचोगे नहीं। तुमने हम पर बहुत अत्याचार किए हैं, अब भगवान इसका फल तुम्हें देगा।'

मुखिया की आंखें खुलीं। उसने सोचा, अगर उसने जनता की भलाई का ध्यान रखा होता, उनके दुख-सुख में हिस्सा बंटाया होता तो आज यह हालत कभी नहीं आती। लोग एक इशारे में उसकी मदद को आ जाते। लेकिन उसने कबीले

वालों का कभी ध्यान नहीं रखा था, इसलिए वे भी उसकी मदद नहीं करेंगे। उसे मालूम हो गया कि सभी उसके खिलाफ हैं। कोई भी उसका साथ नहीं देगा।

पानी का वेग बढ़ता ही जा रहा था। अब कोई भी शक्ति उसे बचा नहीं सकती थी। उसकी अट्टालिका की जड़ पानी से कमजोर होने लगी, पूरा मकान जोरों से हिलने लगा। अचानक हवा का एक तेज झोंका आया और उसकी अट्टालिका तिनके की तरह जांबेजी नदी में जा गिरी। अट्टालिका के साथ मुखिया और कर्मचारी भी नदी में डूबकर मर गए।

कबीले के वासियों ने चैन की सांस ली। वे कई दिनों तक लकड़ी के तख्तों पर तैरकर अपनी जीवन-रक्षा करते रहे। धीरे-धीरे पानी उतरने लगा।

एक दिन जब सारा पानी सूख गया तो वे अपने कबीले में लौट आए और नए सिरे से अपने मकान बनाकर रहने लगे। उन्होंने कबीले के एक सद्पुरुष को अपना मुखिया बनाया। उस ने हमेशा अपने कबीले के सुख-दुख में हिस्सा बंटाया। वह जानता था कि अगर मुखिया ठीक हुआ तो कबीले पर कभी आफत नहीं आएगी। क्योंकि कबीले पर आफत तभी आती है, जब मुखिया आलसी और विलासी होता है।



लीबिया की लोककथा

लीबिया १६५१ में विदेशी हुकूमत से स्वतंत्र हुआ था। यहां की कुल आबादी १२,०००,०० है, जिसमें अधिसंख्य मुसलमान हैं। यह देश ६,७६,३५८ वर्गमील में फैला हुआ है। यहां की राजधानी त्रिपोली है। दूसरे नगर बेंगाजी को भी राजधानी का दर्जा प्राप्त है। लीबिया के पश्चिम में अल्जीरिया है और पूर्व में मिस्र। उत्तरमें मध्य सागर है।

'घमण्ड का नतीजा' लीबिया की प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्य-क्रम में पढ़ाई जाती है।



घमण्ड का नतीजा

बेंगाजी में उन दिनों राजा निम्मे का राज्य था। बेंगाजी छोटा-सा राज्य था और चारों ओर घने जंगलों से घिरा हुआ था। जनता छोटे-छोटे कबीलों में वास करती थी। लोग खेती-बाड़ी करते और फल-फूल उगाते थे। राजा अपनी जनता को बहुत मानता था, अतः प्रजा भी जी-जान से उसके गुणगान करती थी।

राजा निम्मे के सात बेटे थे। छोटे बेटे मुनमुन के अलावा शेष बेटे भी राजा की भांति नेक थे। लेकिन मुनमुन अपने बाप के लाड़-प्यार के कारण थोड़ा बिगड़ गया था। वह किसीकी बात नहीं सुनता था। हमेशा घमण्ड और गर्व से सब के साथ बात करताथा। वह छोटे-बड़े का लिहाज भी नहीं करता था और हर किसी पर हुकुम चलाता था। किसीसे कभी भूल से कोई गलती हो जाती तो वह बुरी तरह उस पर गुस्सा करता और उसे दण्ड देता। उसके उद्दंड स्वभाव के कारण महल के

कर्मचारी तथा प्रजा दुखी थी। मगर कोई कुछ कहता नहीं था। सभी राजा तथा उसके भाइयों की सज्जनता के कारण उसे क्षमा कर देते।

एक दिन की बात है, सातों भाई मछलियों का शिकार करने नदी पर गए। उन्होंने नदी में जाल फेंक दिया और सात मछलियां पकड़ लीं। मछलियां पकड़कर सातों भाई खुश हो गए और उन्होंने उन्हें सुखाने के लिए धूप में रख दिया।

थोड़ी देर के बाद छः राजकुमारों की मछलियां तो सूख गईं, लेकिन छोटे राजकुमार मुनमुन की मछली नहीं सूखी। वह अवसर पाकर कूदने लगी और नदी की तरफ जाने लगी। मुनमुन ने उसकी यह हरकत देख ली। वह आग-बबूला हो गया। उसने झपटकर मछली को पकड़ लिया और क्रोध से बोला, 'अरी, बाकी मछलियां तो सूख गईं, तू सूखने से कैसे बच गई ?'

मछली बेचारी सहम गई। उसने धीमे गले से उत्तर दिया, 'इसमें मेरा कोई दोष नहीं, छोटे राजकुमार! पास ही घास का ढेर पड़ा था, इसलिए मुझे धूप लगी ही नहीं।'

राजकुमार ने घास के ढेर को देखा। सचमुच उसकी छाया में मछली सूखने से बच गई थी। राजकुमार को घास के ढेर पर बड़ा गुस्सा आया। वह दांत भींचकर बोला, 'तुझे यहां किसने फेंक रखा है ? तेरे कारण मेरा भारी नुकसान हो गया है।'

घास ने उसकी उद्दण्डता सुन रखी थी। वह मिमियाकर बोली, 'मैं क्या करूं ? आज मुझे गाय ने चरा नहीं। अगर गाय ने मुझे चर लिया होता तो सारे मैदान में धूप खिली होती।'

'हूं ! तो इसका मतलब है कुसूरवार गाय है।' यह कहकर मुनमुन गाय के पास पहुंचा। गाय बेचारी खूंटे से बंधी थी। मुनमुन ने पहले तो जोर से छड़ी मारी, फिर उसका कुसूर बताया।

गाय ने जवाब दिया, 'इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं। चरवाहे ने मुझे खूंटे से खोला ही नहीं। फिर भला मैं घास चरने कैसे जाती ?'

राजकुमार तुरंत चरवाहे के पास पहुंचा। अब तक उसका गुस्सा सातवें

आसमान पर चढ़ गया था।

चरवाहा अपनी झोंपड़ी में उंगली पकड़ कर दर्द से तड़प रहा था। मुनमुन ने ऐंठकर पूछा, 'यहां बैठा-बैठा क्या कर रहा है? गाय को चराने क्यों नहीं गया?'



चरवाहा दर्द से कातर होकर बोला, 'छोटे राजकुमार, मेरी उंगली में चींटे ने डंक मार दिया है, इसलिए मैं आज घर से निकल नहीं सका।'

'ओहो, तो इसका मतलब है सारी कारस्तानी की जड़ यही चींटा है। मैं अभी जाकर उसकी खबर लेता हूं।' मुनमुन बड़बड़ाता हुआ चरवाहे की झोंपड़ी

से निकल ग्राया ।

बाहर एक झाड़ी के पास चींटा मिल गया। मुनमुन ने तेज आवाज में कहा, 'बेवकूफ, तूने चरवाहे को डंक क्यों मारा ? तेरे कारण मेरी मछली नहीं सूखी। मैं तेरी जान निकाल दूंगा।'

मुनमुन कड़वी जबान का था तो चींटा भी कम नहीं था। उसकी जबान पर तो हमेशा जहर सवार रहता है। उसने तैश में आकर कहा, 'मुझसे इस तरह बात करने की जरूरत नहीं। मैं तुमसे ज्यादा उद्दंड हूं। मुझे हाथ लगाग्रोगे तो ग्रभी डंक मार दूंगा। भाग जा यहां से।'

लेकिन मुनमुन ग्रपने घमण्ड में चूर था। उसने अपना पैर बढ़ा कर उसे जैसे ही मसलना चाहा कि चींटे ने पैर में डंक मार दिया। मुनमुन दर्द से चीखकर पीछे हट गया।

मुनमुन रोते-रोते नदी किनारे ग्रा गया। घास की छाया में ग्रभी तक मछली पड़ी हुई थी। उसने राजकुमार को रोते देखा तो पूछा, 'क्या हुग्रा, छोटे राजकुमार ?'

मुनमुन ने सारी कथा सुना दी।

मछली बोली, 'छोटे राजकुमार, जिस प्रकार चींटे के काटने से तुम्हें दर्द हुग्रा है, इसी प्रकार तुम्हारी जहर-भरी बातें सुनकर दूसरे लोगों को भी कष्ट होता है। अब तो तुम जान गए कि दर्द कैसा होता है। इसलिए दूसरों का दर्द भी मत बढ़ाओ।'

मुनमुन को मछली की बात जंच गई। उसने मछली को नदी में डाल दिया और महल लौट आया।

उस दिन से वह सबसे अच्छी तरह व्यवहार करने लगा।

●●

युगांडा की लोककथा

विक्टोरिया झील के किनारे बसा युगांडा नव-स्वतन्त्र राष्ट्र है। पहले यह ब्रिटिश-अधिकृत प्रदेश था। इस देश की राजधानी एन्टेबे है। यहां की कुल आबादी ६,५१७,००० है, जो ९३,९८१ वर्गमील में फैली है।
'भय का कारण' युगांडा की प्रसिद्ध लोककथा है।



भय का कारण

आजकल जहां 'विक्टोरिया झील' है, किसी जमाने में उसके चारों ओर छोटे-छोटे कबीले हुआ करते थे।

एन्टेबे क्षेत्र के पास वाला कबीला अन्य कबीलों के मुकाबले में अधिक मेहनती था। यहां के लोग मिल-जुलकर रहते थे और खेती-बाड़ी करते थे।

कबीले में एक लड़का रहता था। उसका नाम था टोगो। उसके पास एक छोटा-सा बछड़ा था। वह उसे रोज जंगल की तरफ ले जाता था और घास चराता था।

एक दिन वह बछड़े को जंगल में ले गया और खूंटे से बांध कर छोड़ दिया। बछड़ा इधर-उधर घूम-फिर चरने लगा। टोगो भी अपने खेल में मस्त हो गया।

जब शाम घिरने लगी तो टोगो को घर की याद आई। वह बछड़े के पास जाने लगा। लेकिन बछड़ा अपनी जगह पर नहीं था। टोगो की समझ में नहीं आया कि खूंटे से बांधा बछड़ा कहां गायब हो गया।

टोगो चिंता में पड़ गया।

अचानक उसने देखा कि एक चिड़िया बड़ी तेजी से भागी आ रही है। उसकी बदहवासी देखकर टोगो अपनी चिंता भूल गया। वह बोला, 'अरी चिड़िया, इतनी तेजी से क्यों भाग रही हो?'

चिड़िया बोली, 'तुम भी भागो। देखते नहीं, पीछे कौन आ रहा है।'

टोगो ने चिड़िया के पीछे देखा। एक चूहा तेजी से भागा आ रहा था। टोगो ने कहा, 'वाह चूहे भाई, इतना तेजी से भागने की क्या जरूरत है? तुम्हारे कारण बेचारी चिड़िया भी डरकर भाग रही है।'

चूहा बिना रुके बोला, 'बात ही ऐसी है। देखो, मेरे पीछे कौन आ रहा है?'

पीछे से बिल्ली दौड़ी आ रही थी। पास आने पर टोगो बोला, 'क्यों चूहे के पीछे पड़ी है?'

बिल्ली बोली, 'मैं किसी के पीछे नहीं पड़ी। बल्कि मेरे पीछे ही कोई पड़ा है।'

सचमुच बिल्ली के पीछे कुत्ता दौड़ा आ रहा था। टोगो को बुरा लगा। उसने कहा, 'कुत्ते भाई, क्यों बिल्ली के पीछे भाग रहे हो? बेचारी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?'

कुत्ता डर कर भागता जा रहा था। जाते-जाते बोला, 'कैसी बिल्ली, भैया! मैं तो अपनी जान बचाने को भाग रहा हूं। देखो, मेरे पीछे कौन आ रहा है?'

टोगो की कुछ समझ में नहीं आया। सभी डर कर भाग रहे हैं। पहले चिड़िया भागी, चिड़िया के पीछे चूहा, चूहे के पीछे बिल्ली और बिल्ली के पीछे कुत्ता। अब कुत्ते के पीछे कौन आ रहा है? तभी उसकी नजर बन्दर पर पड़

गई। टोगो मन-ही-मन बुदबुदाया, 'अच्छा, तो इसी बन्दर ने सबको तंग कर रखा है।'

जब बन्दर पास आया तो टोगो ने घुड़ककर कहा, 'क्यों रे बन्दर, सबको डरा क्यों रहा है ? जाओ, जाकर पेड़ पर आराम करो।'

बन्दर बोला, 'मैं तो पेड़ पर आराम ही कर रहा था। पर अचानक मेरे पीछे कोई भागने लगा तो डरकर मैं भी भागने लगा। देखो देखो, वो कौन आ रहा है मेरे पीछे ? मैं तो उसीसे डर कर भाग रहा हूं।'

इतना कहकर बन्दर भी तेजी से आगे निकल गया। टोगो हैरान रह गया।

तभी कबीले के मुखिया का लड़का हांफता हुआ भागा आया। टोगो समझ गया कि यह लड़का ही सारे जानवरों के पीछे पड़ा होगा। वह बोला, 'ठहरो-ठहरो, क्यों छोटे-छोटे जानवरों को डरा रहे हो। वे बेचारे तुम्हारे डर से भागे जा रहे हैं।'

मुखिया का लड़का हांफता-हांफता बोला, 'मैं किसीको नहीं डरा रहा। मैं तो जंगल में शिकार खेलने गया था। अचानक बहुत जोरों की 'खड़-खड़' की आवाज सुनाई दी। कोई बहुत बड़ा जानवर जंगल से भागा आ रहा है। हम सबकी खैर नहीं, तुम भी भाग चलो।'

इतना कहकर वह दौड़ कर भाग गया।

टोगो ठगा-सा खड़ा रहा। अचानक उसके कानों में भी 'खड़-खड़' की आवाज गूंजी। टोगो डर गया। वह भी भागने की सोचने लगा। तभी उसकी नजर बछड़े पर गई। वह दौड़ता हुआ चला आ रहा था। उसके गले में रस्सी बंधी थी और रस्सी से खूंटा। भागने से खूंटा धरती से रगड़ खा रहा था, इसलिए 'खड़-खड़' की आवाज हो रही थी।

टोगो की समझ में सब-कुछ आ गया। उसने बछड़े को पकड़ लिया, फिर चिल्ला-चिल्लाकर सबको कहने लगा, 'अरे भाई, सब ठहर जाओ, भागो मत। डरने की कोई जरूरत नहीं। यह मेरा बछड़ा है, इसके गले में खूंटा बंधा है, उसीसे 'खड़-खड़' हो रही है।'

सबने सुना तो थम गए। टोगो ने उनसे कहा, 'बिना कारण जाने डरकर भागना मूर्खता है। पहले ही अगर 'खड़-खड़' का कारण जान लिया होता तो डरने की नौबत नहीं आती। इसलिए भविष्य में जो करो, पहले सोच-समझ लो। अन्यथा बाद में असलियत मालूम होने पर पछताना पड़ेगा।'

सबने टोगो की बात गांठ में बांध ली। उन्होंने तय कर लिया कि भविष्य में बिना कारण डरेंगे नहीं, बल्कि डर का मुकाबला करेंगे।

टोगो अपने बछड़े को लेकर कबीले की ओर चल दिया।



कांगो की लोककथा

कांगो ने १९६० में विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त की थी। इसकी राजधानी का नाम लियोपोल्डविले है। यह ९०४,७५७ वर्गमील में फैला हुआ है और यहां की आबादी १३,५५९,००० है। कांगो में 'कांगो' नामक नदी बहती है, जो विभिन्न प्रदेशों से गुजरती हुई अटलांटिक सागर में गिरती है। नदी की कुल लंबाई २,९०० मील है।

'भगवान जो करता है......' नामक कहानी चंद्र पर्वतमाला के तराई के भागों में अत्यन्त लोकप्रिय है।



भगवान जो करता है......

चंद्र पर्वतमाला की तराई में राजा बामाको राज्य करता था। वह बहुत नेक था, तथा अपने राज्य के सभी कबीला-वासियों के दुख-दर्द में हिस्सा लेता था। राजा का मंत्री भी नेक था। वह राजा को हमेशा अच्छी-अच्छी सलाह दिया करता था। राजा भी अपने मंत्री को बहुत मानते थे।

एक दिन राजा बामाको जंगल में शिकार खेलने गए। साथ में और भी कई सैनिक थे। सबके हाथ में बड़े-बड़े तीर-कमान और भाले थे। एकाएक राजा ने एक शेर को देखा। उसी समय उन्होंने अपना तीर-कमान संभाला और शेर पर

तीर चला दिया। तीर तो शेर की छाती में चुभ गया, लेकिन राजा के अंगूठे में तीर चलाते समय चोट आ गई और उसमें से खून बहने लगा। सारे सैनिक मृत शेर को संभालने में लगे थे, जैसे ही उनकी नजर राजा के अंगूठे पर गई तो चीख-पुकार मचाने लगे। कुछ लोगों ने शेर को उठाया और कुछ लोगों ने राजा को अपने कंधे पर बिठाया। फिर वे महल की ओर चले।

महल में सबने राजा के साथ सहानुभूति का प्रदर्शन किया। मंत्री ने राजा का घाव देखा तो बोला, 'भगवान जो करता है, भले के लिए ही करता है।'

राजा को मंत्री की बात खल गई। एक तो उनका दर्द के मारे बुरा हाल था, दूसरे मंत्री सहानुभूति की बजाय भगवान की भलाई की बात कर रहा है! चिढ़कर राजा बोले, 'इसमें कौन-सी भलाई की बात है?'

'राजन्! यह तो समय ही बताएगा।'

राजा को उसकी बात सुनकर गुस्सा आ गया। उसने सिपाहियों को आज्ञा दी, 'ऐसे मंत्री को जेल में डाल दो, जिसे राजा से जरा भी सहानुभूति नहीं है।'

मंत्री ने सुना तो फिर बोला, 'इसमें भी भगवान की कोई भलाई होगी।'

सिपाहियों ने मंत्री को पकड़ लिया और जेल की कोठरी में डाल दिया।

कुछ दिनों के बाद राजा का अंगूठा ठीक हो गया। लेकिन कटने का दाग स्पष्ट नजर आ रहा था। कुछ समय गुजरने के बाद एक दिन वे अपने सैनिकों के साथ फिर शिकार खेलने गए।

जंगल में काफी दूर तक जाने के बावजूद उन्हें कोई शिकार न मिला। वे इधर से उधर भटक-भटककर थक गए। अचानक बारिश होने लगी। इस अफरा-तफरी में सारे सैनिक भटककर न-जाने कहां निकल गए। राजा अकेले रह गए। उन्हें कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। वे रास्ता टटोल-टटोलकर जंगल से बाहर निकलने का प्रयास करने लगे। लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। वे जंगल में अधिक दूर तक निकल गए।

उस जंगल में एक क्रूर जाति का कबीला बसता था। राजा को इस बात का ज्ञान नहीं था। वे अपनी धुन में बढ़ते जा रहे थे। अचानक पेड़ों की ओर से

कुछ जंगली लोग निकल आए और राजा को पकड़ लिया। राजा एकदम घबरा गए। उन्होंने बचाव का कोई प्रयास नहीं किया, क्योंकि मौका प्रतिकूल था। वे चुपचाप उन जंगलियों के साथ चल पड़े। इस बीच बरसात थम गई थी।

जंगली राजा को कबीले के पुरोहित के पास ले आए। पुरोहित ने राजा को



देखा तो बड़ा प्रसन्न हुआ। बोला, 'आज हमारे देवता की पूजा है। तुम्हें देवता के लिए बलि पर चढ़ाया जाएगा।'

राजा की डर के मारे हालत खराब हो गई। उन्होंने पुरोहित को अनेक प्रकार से समझाया, यह भी बताया कि वे राजा हैं, लेकिन पुरोहित ने उनकी बात पर जरा भी ध्यान न दिया।

जंगलियों ने राजा को एक पेड़ से बांध दिया। वध करने वाले ने अपना छुरा निकाला और उसे पत्थर पर घिसकर तेज करने लगा। पुरोहित मंत्रोच्चार के साथ-साथ राजा पर फूल बरसाने लगा। बोला, 'राजा, तुम्हें खुश होना चाहिए कि तुम्हारी बलि ली जा रही है। तुम सीधे स्वर्ग जाओगे।'

राजा चुप रहा। वधिक ने जब छुरा तेज कर लिया तो पुरोहित राजा के अंग-प्रत्यंग का निरीक्षण करने लगा। एकाएक उसकी नजर राजा के अंगूठे पर गई। वह दुखी स्वर में बोला, 'इसकी बलि लेने से हम पर पाप चढ़ेगा। हमारा कबीला नष्ट हो जाएगा। यह अखंड नहीं है। इसका अंगूठा कटा हुआ है। इसे छोड़ दो।'

जंगलियों ने उसी समय राजा को छोड़ दिया। राजा ने भगवान को मन-ही-मन धन्यवाद दिया और महल की ओर भाग चला। महल में पहुंच कर उसे अचानक मंत्री की याद आ गई। मंत्री ने ठीक ही कहा था कि भगवान जो करता है, भले के लिए करता है। अगर उस दिन मेरा अंगूठा न कटा होता तो आज मैं जीवित नहीं होता। यह सोचकर उसने तत्काल सिपाहियों को आज्ञा दी कि वे सम्मान के साथ मंत्री को यहां ले आएं।

सिपाही मंत्री को जेल की कोठरी से निकाल लाए।

राजा ने सारी कहानी मंत्री को सुना दी। अंत में बोले, 'मुझे दुख है कि मैंने आपको जेल में डाल दिया। आज मुझे आपकी बात की सत्यता का दृष्टांत मिल गया। लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई। भला आपको जेल में डालने से भगवान की कौन-सी भलाई सिद्ध होती है ?'

मंत्री ने मुस्कराकर उत्तर दिया, 'इसमें भी भगवान की भलाई थी। अगर आपनेमुझे जेल में न डाला होता तो मैं भी आपके साथ शिकार पर गया होता। फिर जंगली कबीले के लोग हम दोनों को पकड़कर ले जाते। अंगूठा कटा होने के कारण आप तो बलि से बच जाते, लेकिन मेरे अखण्ड शरीर को वधिक अपने छुरे से अवश्य काट डालता। लेकिन आप के द्वारा जेल भेजे जाने से मैं बच गया।'

राजा को बात समझ में आ गई। उस दिन से वे मंत्री का अधिक सम्मान करने लगे।

●●

नाइजेरिया की लोककथा

अटलांटिक महासागर के किनारे बसा नाइजेरिया स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद सन् १९६० से 'ब्रिटिश कामनवैल्थ' से संयुक्त है। लागोस यहां की राजधानी का नाम है। यह ३७३,२५० वर्गमील में फैला हुआ है। यहां की आबादी ३५,०००,००० है।

'खुशामदियों का अंत' समुद्री किनारे के क्षेत्रों की लोकप्रिय कथा है।



खुशामदियों का अंत

एक जमाने में लागोस प्रदेश में 'बतावा' जाति का कबीला रहता था। उस कबीले के सरदार का नाम 'ओकापी' था। वह अत्यन्त वीर और बलशाली था। उसने आस-पास के जितने कबीले थे, अपने कबीले में मिला लिए। इस प्रकार वह पूरे लागोस प्रदेश का राजा बन गया।

उसने बाकायदा सेना का गठन किया और कबीलों की देख-रेख के लिए कई कर्मचारी नियुक्त किए।

धीरे-धीरे 'ओकापी' के चारों ओर खुशामदी लोगों की भीड़ एकत्र होने लगी। वे बात-बात पर राजा की तारीफ करते। ओकापी को यह सब बुरा लगता था। वह वीर प्रकृति का था। उसे इस प्रकार की चाटुकारिता तथा खुशामद से

सख्त नफरत थी। लेकिन मना करने के बावजूद वे लोग अपनी करनी से बाज नहीं आते थे।

राजा जब अधिक परेशान हो गया तो वह एक दिन अपने गुरु के पास गया। उसका गुरु दूर एक जंगल में कुटिया बनाकर रहता था। ओकापी ने उसके पास जाकर अपनी मनोव्यथा कह सुनाई। गुरु बोला, 'सुनो, मैं तुम्हें एक नुस्खा बताता हूं।'



यह कहकर गुरु ने उसके कान में कुछ कहा।

ओकापी गुरु की बात सुन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने गुरु को प्रणाम किया और अपने किले में लौट आया।

दूसरे दिन सबेरे उसने नाश्ते में बैंगन का भुर्ता बनाने की आज्ञा दी। रसोइयों ने बड़ी लगन से बैंगन का भुर्ता बनाया और राजा के सम्मुख रख दिया। सचमुच भुर्ता स्वादिष्ट था। राजा चाव से खाने लगे और बीच-बीच में तारीफ करने लगे।

दरबार में कई खुशामदी लोग बैठे थे। उन्होंने ओकापी को जब भुर्ते की तारीफ करते देखा तो भला वे क्यों चुप रहते। वे भी सब हां-में-हां मिलाने लगे। कहने लगे, 'हां, वीर सरदार! बैंगन का भुर्ता बड़ा स्वादिष्ट होता है। इसके खाने से शरीर अधिक बलशाली होता है।'

ओकापी ने सुना तो उसके होंठों पर मुस्कान थिरक आई। वह जोर-जोर से खिलखिलाने लगा। राजा को खिलखिलाते देखा तो खुशामदियों से भी न रहा गया। वे भी जोर-जोर से खिलखिलाने लगे। ओकापी ने नाश्ता खत्म कर लिया और आराम से बैठ गया।

थोड़ी देर के बाद वे पेट पर हाथ फेरने लगे और दर्द से कराहने लगे। खुशामदियों ने अवसर अनुकूल पाया। वे जरा पास खिसक आए और सहानुभूतिपूर्वक कहने लगे, 'हे वीर सरदार! आपको अचानक क्या हो गया?'

ओकापी बोला, 'लगता है, बैंगन का भुर्ता खाने से पेट में दर्द हो गया है।'

खुशामदी कहने लगे, 'बैंगन का भुर्ता कभी नहीं खाना चाहिए। यह बादी करता है।'

एक और बोला, 'मैं तो वीर सरदार को सुझाव दूंगा कि बैंगन की खेती पर ही पाबंदी लगा देनी चाहिए।'

एक और ने कहा, 'हां, बैंगन एक निकृष्ट सब्जी है।'

ओकापी का क्रोध से चेहरा लाल हो गया। वह चीखकर बोला, 'अभी थोड़ी देर पहले तो तुम बैंगन की तारीफ करते थकते नहीं थे, अब बुराई शुरू कर दी!'

खुशामदियों का चेहरा उतर आया। वे आंख चुराने लगे। ऐक ने साहस करके कहा, 'हे वीर सरदार! हम तो आपके मन को देखकर बातें करते थे।'

ओकापी बोला, 'दूसरे के मन को देखकर नहीं, हमेशा अपने विवेक को सामने रखकर बात करनी चाहिए। तुम लोग छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए खुशामद करते हो, यह ठीक नहीं।'

खुशामदी इधर-उधर ताकने लगे।

ओकापी ने अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि इन खुशामदियों को लागोस की सीमा से बाहर खदेड़ दिया जाए।

●●

टोगो की लोककथा

'अनोखा न्याय' लोककथा टोगो में आज भी दूर-दराज के क्षेत्रों में अत्यन्त लोकप्रिय है। टोगो सन् १९६० में विदेशी हुकूमत से आजाद हुआ था। इसकी राजधानी का नाम लोमे है। यह लगभग २१८९३ वर्गमील में फैला हुआ है। यहां की आबादी ११०००० है।



अनोखा न्याय

लोमे के पास एक छोटा-सा कबीला था। उसमें दो भाई रहते थे। एक भाई अमीर था और दूसरा गरीब था। अमीर भाई के पास खेत-खलिहान थे, कई नौकर-चाकर थे और ढोर-डंगर थे। वह आराम से अपने घर में बैठा रहता। सारा काम उसके नौकर-चाकर करते थे। उसकी जिन्दगी बड़े एशो-आराम से गुजरती थी।

गरीब भाई की हालत बदतर थी। वह मेहनत-मजदूरी करके अपना तथा अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। कभी-कभी तो फाके की नौबत भी आ जाती थी लेकिन वह सिद्धान्तों का पक्का था। बुरी-से-बुरी हालत में भी वह किसीके आगे हाथ नहीं फैलाता था। उसने आज तक अपने बड़े भाई से भी कभी कुछ नहीं मांगा था।

एक दिन की बात है कि वह मेहनत-मजदूरी करके घर आया। आते समय उसने हाट से चावल और सूखे मटर खरीद लिए थे। अपनी घरवाली को सामान सौंपकर बोला, 'जल्दी से खाना तैयार करो।'

पास ही उसके दो बच्चे सो रहे थे। उनपर चादर डालकर घरवाली बोली, 'ईंधन तो खत्म हो गया है। पास के जंगल से जरा लकड़ियां बटोर लाओ।'

शाम हो गई थी, लकड़ियां लाते-लाते अधिक देर हो जाने की संभावना थी। इसके इलावा उसे भूख भी लगी हुई थी। इसलिए वह अपने अमीर भाई के पास पहुंचा और सवारी के लिए घोड़ा मांग लिया। वह बोला, 'लकड़ियां बटोर कर मैं जल्दी से घोड़ा वापस कर दूंगा।'

'ठीक है, ले जाओ।' अमीर भाई ने उत्तर दिया। गरीब भाई घोड़ा लेकर जंगल में पहुंचा। उसने इधर-उधर से काफी लकड़ियां बटोर लीं और उनका गट्ठर बनाकर घोड़े की पीठ से बांध दिया।

रात घिरने लगी थी। उसने घोड़े को ऐड़ लगाई। वह पीठ पर लकड़ियां संभाले चलने लगा। आगे-आगे लगाम थामे गरीब भाई चल रहा था। रास्ता कांटेदार था। चारों ओर कंटीली झाड़ियां थीं। चलते-चलते एकाएक घोड़े की पूंछ एक कंटीली झाड़ी में फंस गई। इससे घोड़े की पूंछ कट गई। गरीब भाई बड़ा घबराया। जब वह अमीर भाई के घर पहुंचा तो उसने घोड़े की कटी पूंछ देखी। वह गुस्से से आग-बबूला हो गया। उसने गरीब भाई को खूब खरी-खोटी सुनाई। वह बेचारा लकड़ियां लेकर अपने घर पहुंचा। भाई की गाली-गलोच और कड़वी बातों को याद कर उसका मन बड़ा दुखी हो गया। खाना बन गया तो घर के सभी सदस्यों ने खाया, पर वह बिना खाए ही लेट गया। किसी संकट की आशंका से उसे रात-भर नींद न आई।

अगले दिन अमीर भाई ने कबीले के सरदार को उसकी शिकायत कर दी। सरदार ने पंचायत करने का दिन निश्चित कर दिया।

पंचायत के दिन गरीब भाई और अमीर भाई सरदार के यहां जाने लगे।

गरीब भाई दुख और शर्म के मारे सिर झुकाए चल रहा था। अमीर भाई घमण्ड से ऐंठा हुआ था। उसे यकीन था कि सरदार गरीब भाई को खूब कड़ी सजा देगा।

रास्ते में एक नदी पड़ती थी। उस पर लकड़ी का एक कच्चा पुल था। जिस समय दोनों भाई पुल से गुजर रहे थे, उसी समय नदी के मार्ग से एक आदमी अपने बूढ़े और बीमार बाप को नाव में बिठाकर ओझाजी के पास ले जा रहा था। गरीब भाई अपनी चिंताओं में खोया हुआ था। अनजाने में उसका पैर फिसल गया और वह धड़ाम से नीचे बीमार आदमी के ऊपर जा गिरा। इतने बड़े आदमी का बोझ बीमार आदमी न सह सका। वह पहले ही बीमार और कमजोर था। इसलिए वह जल्दी ही मर गया।

बीमार आदमी के बेटे ने गरीब भाई को पकड़ लिया। जब उसे पता चला कि वह अमीर भाई के साथ सरदार के पास जा रहा है, तो वह भी साथ हो लिया।

पंचायत में दोनों ने गरीब भाई पर अपने-अपने मुकद्दमे ठोक दिए। सरदार ने गौर से उनकी बातें सुनी। गरीब भाई एक तरफ दुबका खड़ा था। सरदार को समझते देर न लगी कि गरीब भाई बेकुसूर है और बिना बात के मुसीबत में फंसाया जा रहा है। उसने मन-ही-मन तय कर लिया कि गरीब भाई को किसी तरह बचाना चाहिए।

सबकी बात सुन लेने के बाद सरदार विचार-मग्न हो गया। थोड़ी देर के बाद उसने फैसला सुनाया :

'चूंकि गरीब भाई का कुसूर साबित हो गया है, इसलिए उसे जरूर सजा मिलनी चाहिए। सबसे पहले उसने अमीर भाई के घोड़े की दुम गंवा दी है। इस-लिए बिना दुम का घोड़ा अमीर भाई को लौटाना अन्याय है। घोड़ा तब तक गरीब भाई के पास रहेगा, जब तक कि उसकी नई दुम न उग आए। नई दुम उगने के बाद वह घोड़ा अमीर भाई को लौटा दे।'

थोड़ी देर खामोश रहकर सरदार ने दूसरे मुकद्दमे का फैसला सुनाया—

'गरीब भाई ने नाव में जाते एक बूढ़े और कमजोर आदमी को बेमौत मारा

है, यह बड़ा गंभीर मामला है। अब गरीब भाई को आज्ञा दी जाती है कि वह भी नाव से उसी रास्ते से गुजरे और बूढ़े का बेटा पुल से कूदकर उस पर गिरे।'

सरदार का फैसला सुनकर दोनों बगलें झांकने लगे। अपने-आप में फैसला तो ठीक था, लेकिन इसका पालन करना मुश्किल था। अमीर भाई ने हाथ जोड़-कर निवेदन किया, 'सरदार जी! मैं बिना पूंछ वाला घोड़ा लेने को तैयार हूं।'

बूढ़े आदमी का बेटा बोला, 'मुझे पुल से कूदने में डर लगेगा। अब जो होना था, सो हो गया! मैं गरीब भाई को इतनी कड़ी सजा नहीं दिलाना चाहता।'

सरदार ने डपटकर कहा, 'अगर तुम लोग पंचायत का फैसला नहीं मानोगे तो तुम लोगों को सौ-सौ सोने की मोहरें जुर्माने के तौर पर देनी पड़ेंगी।'

दोनों ने जुर्माना देने में ही अपनी खैर समझी। उन्होंने सौ-सौ सोने की मोहरें सरदार को सौंप दीं और वहां से चले गए। सरदार ने वे सोने की मोहरें गरीब भाई को दीं और कहा, 'मैं पहले ही समझ गया था कि तुम बेकुसूर हो। दुनिया हमेशा गरीब और ईमानदार आदमियों को दबाती है। ये दो सौ मोहरें ले जाओ और कोई धंधा करके सुखपूर्वक अपना घर-संसार चलाओ।'

गरीब भाई ने सरदार को साष्टांग नमन किया और वहां से खुश-खुश चला गया।



घाना की लोककथा

घाना में खतरनाक हाथियों की बहुतायत है। शुरू में जब उनके शिकार की आधुनिक प्रणाली का विकास नहीं हुआ था, तब कई निहत्थे और बेकुसूर ग्रामवासी हाथियों के शिकार हो जाते थे। प्रस्तुत लोककथा के माध्यम से ऐसे निहत्थे ग्रामवासियों में नैतिक बल का संचार करने का प्रयास किया गया है। घाना अब ब्रिटेन से आजाद देश है। १९५७ से यह ब्रिटिश कामन-वैल्थ नेशन्स का सदस्य राष्ट्र है। इसकी राजधानी अकारा है। ९४,८४३ वर्गमील में फैले इस देश की आबादी लगभग ६६९०७३० है।



साहसी शिकारी

अफ्रीका अपने बड़े-बड़े हाथियों के लिए विख्यात है। यहां के हाथी अन्य मुल्कों की अपेक्षा अधिक विशालकाय होते हैं। उनके बड़े-बड़े कान और बड़ी-बड़ी आंखें होती हैं। वे ग्यारह फुट से भी अधिक लंबे और छः-सात टन से भी अधिक वजनी होते हैं। इनका शिकार करना खतरे से खाली नहीं।

किसी जमाने में घाना के दक्षिणवर्ती इलाके में बड़े-बड़े जंगल थे, जिनमें खूंखार हाथी रहते थे। उस इलाके में बहुत कम लोग जाया करते थे।

एक दिन की बात है, एक शिकारी भूले-भटके उस जंगल में पहुंच गया।

यों तो उसे अपने बाहुबल पर विश्वास था, किंतु जैसे ही नाइगर नदी की तरफ उसकी नजर गई, उसकी घिग्घी बंध गई। एक हाथी नदी के पानी से जल-विहार कर रहा था। वह सूंड में पानी भरकर अपने शरीर पर फुव्वारे फेंक रहा था। अचानक उसने शिकारी को देख लिया। बस फिर क्या था। वह चिंघाड़ने लगा। उसकी चिंघाड़ से सारा जंगल कांपने लगा। बेचारा शिकारी तो समझ गया कि अब उसकी जान गई। वह पछताने लगा कि बिना समझे-बूझे वह इस जंगल में क्यों आ गया। हाथी शिकारी के पीछे भागने लगा।

शिकारी ने उसे अपनी ओर आते देखा तो वह भी सरपट भागा। पास ही एक विशाल पेड़ था। वह झट से उसपर चढ़ गया। हाथी ने उसे पेड़ पर चढ़ते देख लिया था। वह अब शिकारी को बख्शने वाला नहीं था। हाथी पेड़ के नीचे आ गया और गुस्से से शिकारी को ताकने लगा। शिकारी पेड़ की सबसे ऊपर वाली फुनगी पर दुबका बैठा था। वहां तक हाथी की सूंड पहुंचनी मुश्किल थी। हाथी क्रोध में उन्मत्त होकर पेड़ की टहनियां तोड़ने लगा। फिर आव देखा न ताव, वह अपने सिर से पेड़ के तने पर ठोकरें मारने लगा। सारा पेड़ हिल रहा था। लेकिन चूंकि पेड़ मजबूत था, इसलिए टूट नहीं रहा था। अब तो हाथी का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। वह और भी ज़ोर-जोर से चीखने और चिंघाड़ने लगा।

शिकारी मन-ही-मन अपने देवताओं को याद कर रहा था। उसके प्राण संकट में थे।

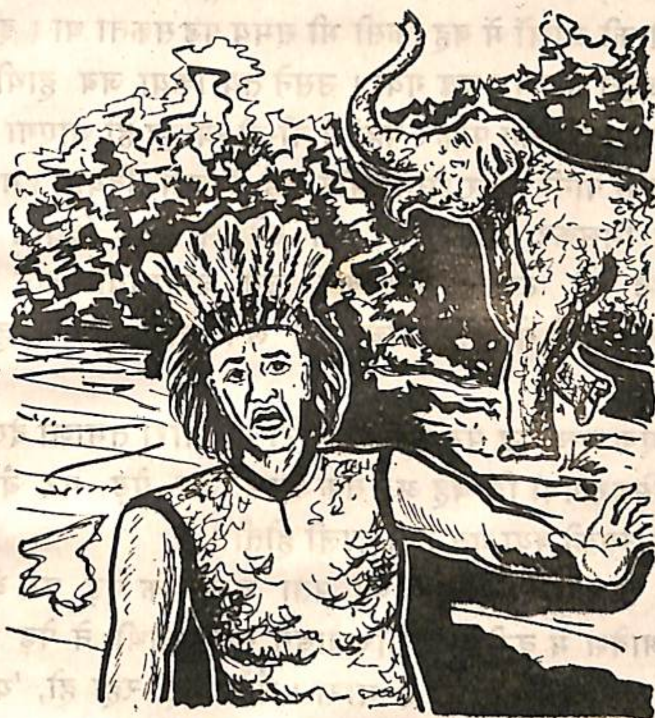
हाथी की चीख-पुकार सुनकर एक हथिनी भी आ गई। अब दोनों मिलकर पेड़ को उखाड़ने की कोशिश करने लगे। दोनों की प्रत्येक टक्कर से शिकारी का कलेजा मुंह को आ जाता था। उसे विश्वास हो गया कि अब वह बचेगा नहीं। लेकिन फिर भी वह जी कड़ा करके बैठा था और बच निकलने के उपाय सोच रहा था।

हाथी और हथिनी पेड़ को धक्का मार-मारकर थक गए। वे कुछ देर के लिए चुपचाप खड़े हो गए। बीच-बीच में सिर्फ से क्रोध शिकारी को देखने लगे। शिकारी सोचने लगा कि वे शायद थक गए हैं और वापस चले जाएंगे। वह उनके

वापस जाने की प्रतीक्षा करने लगा।

तभी हाथी मुड़कर जाने लगा। हथिनी वहीं पर ठहर गई। शिकारी खुश हो गया। उसे विश्वास हो गया कि हथिनी भी जल्दी ही चली जाएगी।

पर उसका सोचना गलत निकला। जल्दी हाथी वापस आ गया। वह नदी तक गया था और सूंड में पानी भर लाया था। उसने सूंड का पानी पेड़ की जड़ में डाल दिया। अब हाथी और हथिनी बारी-बारी से नदी तक जाते और सूंड में पानी



भरकर जड़ में डालते। शिकारी को समझते देर न लगी कि हाथी-हथिनी पेड़ की जड़ खोखली करके पेड़ को गिराना चाहते हैं। अब उसे कोई संदेह नहीं रह गया कि उसका आखिरी समय आ गया है। उसने नीचे कातर दृष्टि से देखा।

हाथी पानी भरने गया हुआ था और हथिनी वहीं खड़ी चौकीदारी कर रही थी। एकाएक शिकारी की नजर हथिनी की आंखों पर गई। हथिनी की बाईं आंख

खराब थी। शिकारी मन-ही-मन खुश हो गया। उसके दिमाग ने जल्दी से बच निकलने की एक योजना तैयार कर डाली। हाथी अब तक नदी से पानी लेकर नहीं लौटा था। उसने मौका बढ़िया देखा। फिर वह हथिनी की बाईं तरफ पहुंचा और धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। हथिनी को जरा भी पता नहीं चला कि उनका शिकार नीचे उतर रहा है। वह तो मस्ती से खड़ी थी और हाथी के लौटने की बाट जोह रही थी।

शिकारी पेड़ से नीचे उतर आया। ज्यादा दूर जाना खतरे से खाली नहीं था, क्योंकि हाथी की आंखों में वह किसी भी समय पड़ सकता था। इसलिए कुछ ही दूर एक अन्य मजबूत पेड़ पर चढ़ गया। उसने तय किया जब हाथी-हथिनी वहां से चले जाएंगे, तब वह मौका पाकर वहां से नौ-दो ग्यारह हो जाएगा।

उधर हाथी पानी लेकर आया और जड़ में डाल दिया। इस तरह काफी देर तक दोनों ने मिलकर पेड़ की जड़ को खोखला कर दिया। फिर दोनों ने जोर-जोर से पेड़ को टक्कर मार कर उसे धराशायी कर दिया। पेड़ के गिरते ही दोनों खुशी से चीखने-चिल्लाने लगे और बुरी तरह से पेड़ को रौंदने लगे।

पास ही एक अन्य पेड़ पर बैठा शिकारी यह सारा तमाशा देख रहा था। यह सोचकर वह सिहर गया कि वह अब तक अगर उस पेड़ पर बैठा होता तो हाथियों ने न-जाने उसकी क्या गत बना डाली होती।

'एकाएक जब हाथी-हथिनी को पता चला कि पेड़ पर बैठा शिकारी नदारद है तो वे आवेश में बुरी तरह चिंघाड़ने लगे। हाथी ने पेड़ का मोटा-सा तना सूंड में लपेट कर हथिनी पर दे मारा। जैसे कह रहा हो, 'यह सब तेरी वजह से ही हुआ, कानी हथिनी!'

कानी हथिनी ने जब हाथी को बेकाबू देखा तो वह जान बचाकर भागी। लेकिन हाथी उसे यों ही छोड़ने वाला नहीं था। वह भी उसके पीछे भागा। दोनों पेड़-पौधों और कंटीली झाड़ियों को रौंदते हुए एक-दूसरे के पीछे भाग रहे थे। अब वे शिकारी को भूल गए थे। हथिनी को अपनी जान की पड़ी थी

और हाथी को उसकी जान लेनी थी।

उधर शिकारी ने चैन की सांस ली। जब हाथी-हथिनी आंखों से ओझल हो गए तो वह पेड़ से नीचे उतरा। वह सोच रहा था, अगर मैंने डर कर अपने होश गंवा दिए होते, तो मेरा बचना मुश्किल था।

वह तेजी से अपने कबीले की ओर चल पड़ा। रह-रहकर उसके दिमाग में एक ही बात आ रही थी कि मुसीबत में जो नहीं घबराता है, भगवान उसकी रक्षा करते हैं।

●●



मोरक्को की लोककथा

मोरक्को मुस्लिम बाहुल्य का राष्ट्र है। यह १९५६ में आजाद हुआ था। इसकी राजधानी रावात है।

प्रस्तुत लोककथा इफ्नी के इलाके में लोकप्रिय है। इफ्नी प्रदेश अब भी स्पेन के कब्जे में है। इफ्नी ७४० वर्गमील में फैला छोटा-सा इलाका है। मोरक्को इसे अपने देश का हिस्सा मानता है।



जनता का राजा

मोरक्को के इफ्नी प्रदेश में एक मक्कार तथा खूंखार राजा राज्य करता था। वह नित्य अपनी जनता को कष्ट पहुंचा कर खुश होता था। वह नए-नए तरीकों से लोगों को परेशान करता था। लोग इस राजा से बड़े दुखी थे। पर उनके बस में था ही क्या ? वे चुपचाप राजा के अत्याचार सहते और भगवान का नाम लेकर रह जाते थे। उन्हें आश्चर्य था कि यह अचानक राजा को क्या हो गया है। पहले तो राजा ऐसा न था। कितने प्यार से प्रजा के सुख-दुख में हिस्सा बंटाता था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से वही राजा खूंखार और मक्कार हो चला था।

एक बार राजा ने घोषणा की कि जो व्यक्ति मेरे प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर देगा उसे पांच सौ सोने की मोहरें इनाम में दी जाएंगी। हालांकि लोगों को राजा पर बहुत ज्यादा विश्वास न था, फिर भी वे सोने की मोहरों के लालच में

दरबार में पहुंच जाते। राजा उनसे उलटे-सीधे प्रश्न पूछता। कोई भी बेचारा उसके प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर न दे पाता। फिर राजा उसे रेगिस्तान में भेज देता। रेगिस्तान इतना विशाल था कि उसका कोई भी ओर-छोर ही नजर न आता। लोग रेगिस्तान में भटक-भटक कर और सूरज की तपती गर्मी से जल-भुन कर खत्म हो जाते।

इफ्नी से कुछ दूर सिदी नामक एक गांव था। वहां अत्यन्त गरीब और भोले-भाले लोग रहते थे। एक दिन राजा की घोषणा वहां भी पहुंची कि जो कोई राजा के प्रश्नों का सही-सही उत्तर देगा, उसे राजा से पांच सौ सोने की मोहरें इनाम में मिलेंगी। घोषणा सुनकर कई लोगों के मुंह में पानी भर आया। लेकिन उन्होंने राजा के अत्याचारों की भी कहानी सुन रखी थी, इसलिए किसी की हिम्मत इफ्नी जाने की न हुई।

उसी गांव में बुइया नामक एक युवक रहता था। उसका बाप मर चुका था औरघर में बुढ़िया मां रहती थी। वह अत्यन्त गरीब था और किसी प्रकार अपना तथा अपनी मां का भरण-पोषण करता था। उसने जब राजा की घोषणा सुनी तो अपनी किस्मत आजमाने की सोची। एक दिन इष्ट देवता का नाम याद करके बुइया इफ्नी पहुंचा।

इफ्नी में कई लोगों ने बुइया को खबरदार किया और राजा की मक्कारी से सतर्क किया, लेकिन बुइया ने किसी की न सुनी और राज-दरबार में पहुंच गया।

राज-दरबार में राजा अपने चापलूस मंत्रियों, सरदारों और दरबारियों से घिरा बैठा था।

राजा ने बुइया को देखा तो पूछा, 'लड़के, यहां क्यों आए हो?'

'हे ईश्वर के प्रतिनिधि, मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देने आया हूं।' बुइया ने विनम्रता से उत्तर दिया।

उसकी बात सुनकर सबके चेहरे पर मुस्कराहट उभर आई। राजा ने कड़ाई के साथ पूछा, 'तुम हमारी शर्तें जानते हो न? अगर तुमने उत्तर ठीक न दिया

तो हम तुम्हें रेगिस्तान भेज देंगे।'

'मुझे मंजूर है।'

'ठीक है। बताओ दुनियां में सबसे बड़ा कौन है ?'

राजा का प्रश्न सुनकर बुइया खामोश रहा। हालांकि प्रश्न बहुत सरल और सीधा-साधा था, लेकिन उत्तर कठिन। बुइया की समझ में न आया कि क्या उत्तर दे। शुरू में तो उसके जी में आया कि कह दे, सबसे बड़े आप हैं। लेकिन वह जानता था कि राजा को इससे संतोष न होगा। वह कहेगा कि 'गलत, सबसे बड़ा तो ईश्वर होता है।' और अगर बुइया ईश्वर को बड़ा बताता है तो तब भी उसकी खैर नहीं। उसे चुप देखकर चापलूस दरबारी चीखने लगे, 'जल्दी जवाब दो, जल्दी जवाब दो।'

बुइया ने सोच-समझ कर कहा, 'दुनियां में सबसे बड़ा यश है।'

एक मंत्री ने आंखें निकाल कर कहा, 'लड़के, क्या यश हमारे राजा से भी बड़ा है ?'

'हां, अगर राजा के काम अच्छे हुए तो वह खुद यशवान होगा, लेकिन अगर उसने बुराइयों का रास्ता पकड़ा तो उसका नाम लेने वाला कोई न होगा।'

सभी दरबारी, सरदार तथा मंत्री उसका उत्तर सुनकर सकते में आ गए। बोले, 'यह लड़का बदतमीज है। इसे रेगिस्तान भेजा जाए।'

राजा ने कहा, 'लड़के, हम तुम्हारे उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हैं। तुम्हें सोने की मोहरें नहीं मिल सकतीं। अब रेगिस्तान जाने के लिए तैयार हो जाओ।'

राजा ने सैनिकों को आज्ञा दी। सैनिकों ने बुइया को पकड़ लिया और दूर विशाल रेगिस्तान में पटककर आ गए।

बुइया बहुत चीखा-चिल्लाया, लेकिन सैनिकों ने उसपर ध्यान न दिया। उनके चले जाने के बाद वह उठा। आसमान पर तेज सूरज चमक रहा था। उसकी तीखी गरमी से रेगिस्तान आग की तरह जल रहा था। बुइया के पैर जलने लगे और सारे शरीर से पसीना छूटने लगा। वह समझ गया कि उसका अन्तिम समय आ गया। वह पछताने लगा कि वह क्यों पांच सौ सोने की मोहरों की लालच में आ

गया। अब गांव में बुढ़िया मां का क्या होगा ?

वह एक टीले पर चढ़ गया और दूर-दूर तक देखने लगा। चारों तरफ रेत ही रेत फैली थी, आग की तरह जलती हुई रेत ! इस रेत पर तो थोड़ी दूर तक चलते ही वह बेमौत मर जाएगा। उसने सोचा कि दिन के समय रेगिस्तान में चलना मौत को दावत देना है, इसलिए बेहतर यह होगा कि रात में सफर किया जाए। उसने उसी समय गड्ढा खोदना आरंभ कर दिया। नीचे काफी ठंडक थी। वह गड्ढे के अन्दर दुबक कर बैठ गया। अब वह सूरज की गरमी से दूर था।

जब रात हुई तो वह गड्ढे से निकला। चारों ओर चांदनी फैली हुई थी। ठंडा-ठंडा वातावरण था। वह आगे बढ़ा। कुछ दूर चलने पर उसे कुछ हरे-भरे पेड़ नजर आए। वह समझ गया कि आस-पास जरूर पानी होगा। उसके अंदर साहस का संचार हो गया। वह उत्साह के साथ पानी खोजने लगा। जल्दी ही उसे पेड़ों के झुंड के बीच में एक छोटा-सा सरोवर नजर आया। बुझ्या बुरी तरह प्यासा था। उसने जी-भर कर पानी पिया, फिर पेड़ों से फल-फूल तोड़ कर खा-पीकर उसे थोड़ा चैन मिला। वह एक पेड़ के नीचे आराम से लेट गया।

अचानक आधी रात को बुझ्या की नींद खुल गयी। उसने देखा कि सरोवर के पास सोने का दीपक जल रहा है। दीपक की रोशनी से आस-पास स्वर्णिम आभा फैल रही थी। सरोवर में तीन हंस तैर रहे थे। बुझ्या भाव-विभोर-सा हंसों को तैरता हुआ देखने लगा। तैरने के बाद हंस सरोवर से निकले। वे जैसे-ही दीपक के पास पहुंचे कि उन्होंने अपना रूप बदल लिया। वे तीन सुंदर परियां बन गए।

बुझ्या हैरान हो गया। उसे समझ में न आया कि वह किस जादू-नगरी में पहुंच गया है।

तभी रेतों के टीले में एक भयानक राक्षस निकला। वह बड़ा लंबा-चौड़ा था। उसके हाथ में एक त्रिशूल था। उसने त्रिशूल नीचे रख दिया और झपटकर दीपक उठा लिया। वह अट्टहास करता हुआ बोला, 'मैं तुम तीनों परियों को ले जाऊंगा और शादी करूंगा।'

तीनों परियां रोने लगीं। बोलीं, 'नहीं, हम तुझसे शादी नहीं करेंगी। इस दीपक को बुझाना मत। अगर तुमने दीपक बुझा दिया तो हम पत्थर बन जाएंगी।'

राक्षस खूब जोरों से हंसने लगा। बोला, 'तुम लोग मुझसे शादी करो, नहीं तो मैं तुम तीनों को अभी पत्थर का बना दूंगा।'

बेचारी परियां डर के मारे रोने लगीं। लेकिन राक्षस के दिल पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

बुइया पेड़ के नीचे बैठा हतवाक्-सा यह सब देख रहा था। उसे राक्षस पर बड़ा क्रोध आया। वह धीरे-धीरे रेंगकर सरोवर के पास पहुँचा। राक्षस अपने घमण्ड में चूर था और परियां रोने में लगी थीं, अतः बुइया पर किसी का ध्यान नहीं गया उसने राक्षस का त्रिशूल चुपके से उठा लिया और मौका पाकर बिजली की गति से राक्षस के पेट में भोंक दिया। राक्षस चीखकर जमीन पर गिर पड़ा और जलकर भस्म हो गया।

बुइया ने दीपक उठाकर फिर सरोवर के पास रख दिया। परियां उसकी बहादुरी देखकर अत्यंत प्रभावित हुईं—बोलीं, 'तुमने हमारी जान बचाई है, हम तुमसे बहुत खुश हैं। बोलो, तुम हमसे क्या चाहते हो?'

बुइया ने कहा, 'मुझे दुष्ट राजा से बदला लेना है। वह सबको तंग करता है।'

परियां बोलीं, 'वो असली राजा नहीं है! उसने राजा को कैद करके खुद को राजा बना दिया है। वह तो जादूगर है।'

बुइया को जब असलियत का पता चला तो वह क्रोध से आग-बबूला हो गया। बोला, 'हे परियो, मुझे कोई उपाय बताओ, ताकि मैं उस जादूगर को मार डालूं।'

परियों ने उसे राक्षस का त्रिशूल और एक शंख दिया। बोलीं, 'इस शंख को बजाओगे तो सारी जनता को असलियत मालूम हो जाएगी। और इस त्रिशूल से जिस किसीको स्पर्श करोगे, वह आग से भस्म हो जाएगा। अब तुम जल्दी जाओ।'

बुइया शंख और त्रिशूल लेकर इफ्नी आ गया। वह हर गांव, गली और मुहल्ले में शंख फूंकने लगा। शंख की आवाज सुनकर हर आदमी आश्चर्य से कहता, 'अरे, यह राजा असली नहीं है। असली राजा कैद में है।'

शाम तक सारे इफ्नी शहर की जनता ने राजमहल को घेर लिया। राजा के खुशामदी मंत्री और दरबारी तो दुम दबाकर भाग गए, बच गया सिर्फ राजा। लेकिन वह जादूगर था। उसे अपने जादू पर भरोसा था। इसलिए वह घबराया नहीं। जैसे ही उसने लोगों को महल घेरते देखा तो वह अट्टहास करने लगा। उसकी भारी हंसी सुनकर जनता डर गई।

तभी बुइया नकली राजा के पास पहुंच गया। उसने त्रिशूल को राजा के पैरों से स्पर्श कर दिया। पल-भर में राजा के पैर जलकर राख हो गए। अब नकली राजा घबराया। वह बोलने लगा, 'लड़के, मुझे माफ कर दो।'

बुइया बोला, 'तू इस धरती का कलंक है। तेरे जिंदा रहने से जनता तकलीफ पाती रहेगी। बता, हमारा असली राजा कहां है?'

जादूगर ने उसी समय हाथ ऊपर उठाए। उसके हाथों में एक पिंजरा आ गया। पिंजरे में इफ्नी का असली राजा बैठा था।

असली राजा को देखते ही सारी जनता जय-जयकार करने लगी।

बुइया ने मौका पाकर त्रिशूल से जादूगर को खतम कर दिया। उसके मरते ही उसका सारा जादू भी खतम हो गया। पिंजरा टूट गया और उसमें से राजा निकल आया। राजा ने बुइया को गले से लगा लिया।

बुइया बोला, 'हे महाराज, मेरा काम खतम हो गया, अब मैं अपनी मां के पास जाऊंगा।'

'यह कैसे हो सकता है? आज से तुम हमारे महल में रहोगे।' राजा ने कहा।

उस दिन से बुइया मां-सहित राजमहल में सुखपूर्वक रहने लगा।

जनता अपने रहमदिल राजा को पुनः पाकर खुश हो गई।



बासूतो की लोककथा

बासूतोलैंड अफ्रीका के दक्षिण में बसा अत्यन्त छोटा देश है और ब्रिटिश के अधीन है। देश की राजधानी का नाम मासेरू है। यह देश ११,७१६ वर्गमील क्षेत्र में फैला है। आबादी लगभग ६५,८०० है।

यह देश अफ्रीका का अत्यन्त पिछड़ा इलाका है। यहां के भोले-भाले लोग अंग्रेजों से दहशत खाते थे। अंग्रेजों और आदिवासियों से सम्बद्ध अनेक लोककथाएं यहां प्रचलित हैं।



बुराई का बदला नेकी

बासूतो का अधिकांश भाग जंगलों से घिरा हुआ है। इन्हीं जंगलों के बीच एक छोटा-सा गांव था—कावू। कावू में एक युवक रहता था। उसका नाम था बिसाऊ। वह अत्यन्त वीर और भलामानस था। वह जंगलों में जाता था और शिकार करता था। शिकार करना ही उसकी आजीविका का एकमात्र साधन था।

एक दिन बिसाऊ जंगल में गया। काफी खोज-खबर के बाद उसे एक सूअर नजर आया। इतना बड़ा शिकार देखकर वह खुश हुआ। कई दिनों से वह इसी प्रकार के किसी बड़े शिकार की तलाश में था। उसने कमान पर तीर चढ़ाया। लेकिन अचानक सूअर को आभास हो गया कि उसकी मौत करीब ही है। इसलिए वह आंख बंद कर एक ओर भागा। शिकार को यों हाथ से निकलता देख बिसाऊ

हत्प्रभ रह गया। उसने तीर-कमान ताने ही सूअर का पीछा किया। जिंदगी किसे प्यारी नहीं होती, यही कारण था कि सूअर अपने को वचाता हुआ आड़ा-तिरछा भागा जा रहा था। बिसाऊ ने भी हिम्मत न हारी, और वह सूअर के पीछे पड़ा रहा।

इस बीच दोपहर हो गए। बिसाऊ थक गया था। तेज गरमी के कारण उसका शरीर पसीना-पसीना हो गया था। उसे प्यास भी तेज लगी थी। उसकी चाल में सुस्ती आ गई। सूअर ने मौके का फायदा उठाया और घने जंगल में जाकर खो गया।

बिसाऊ थोड़ा निराश तो हुआ, लेकिन भूख-प्यास और थकावट के कारण उसमें अब अधिक दौड़ने की शक्ति शेष नहीं बची थी। वह वहीं एक पेड़ के नीचे आराम करने बैठ गया।

कुछ देर बाद जब वह कुछ स्वस्थ हुआ तो उठ खड़ा हुआ। उसका गांव यहां से बहुत दूर था। भूख और प्यास के कारण उसका बुरा हाल था। इतनी दूर गांव जाना उसके बस में नहीं था। पास ही मासेरू नामक शहर था। उसके पांव उधर ही बढ़ चले थे।

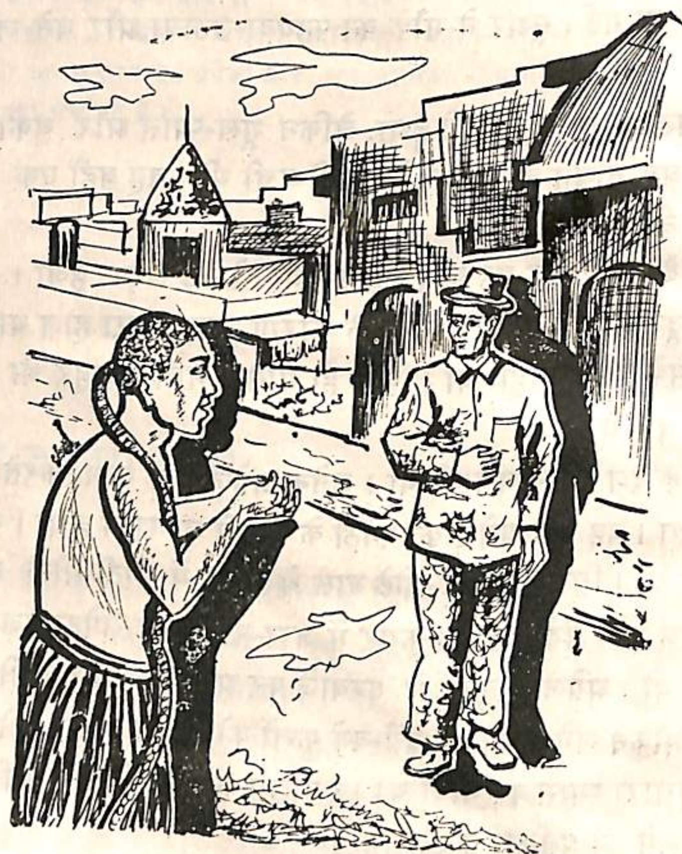
मासेरू देश की राजधानी थी। अनेक अंग्रेज वहां वास करते थे। बिसाऊ बहुत प्यासा था। वह एक अंग्रेज की कोठी के सामने जा खड़ा हुआ। वह देखने में अत्यन्त काला था। सिर पर छोटे-छोटे बाल थे। गले में मोटी-मोटी मालाएं थीं। बांहों में तावीज और गंडे बंधे थे। कमर में जरा-सा कपड़ा लपेटा हुआ था। हाथों में तीरकमान था। अंग्रेज के कुत्तों ने दरवाजे पर अफ्रीकी आदिवासी को देखा तो जोर-जोर से भौंकने लगे। बिसाऊ बड़े-बड़े कुत्तों को देखकर डर तो जरूर गया था, पर वह बेचारा प्यास का मारा था। इसलिए भागा नहीं, बल्कि किसी आदमी के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगा।

कुत्तों की आवाज सुनकर एक अंग्रेज कोठी के वाहर निकला। उसने अपने कुत्तों को चुप कराया। उसकी दृष्टि गेट पर गई तो एक अफ्रीकी युवक को देखकर उसकी त्योरी चढ़ गई। मन में सोचा यह काला आदमी यहां क्या करने आया है?

उसने गुस्से से पूछा, 'क्या बात है ?'

बिसाऊ उसका गुस्सा देखकर सहमा। विनीत भाव से बोला, 'साहब, प्यास से मेरा दम निकला जा रहा है। पानी पिलाकर रहम कीजिए।'

'पानी ? कैसा पानी ?' अंग्रेज चीखकर बोला। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि इस छोकरे की हिम्मत कैसे हुई—एक अंग्रेज के घर से पानी मांगने की ? उसने आवेश में आकर कहा, 'भाग जाओ यहां से। यहां कोई पानी नहीं है।'



बिसाऊ के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने अंग्रेजों की कठोरता के किस्से सुन रखे थे, पर उसे विश्वास नहीं होता था। आज अपनी आंखों से देखकर

उसे विश्वास हो गया। उसकी आंखें नम हो गईं। उसने खून का घूंट पी लिया और सिर झुका कर कोठी से वापस आ गया।

फिर उसकी हिम्मत न हुई कि किसीके घर के दरवाजे पर जाकर पानी मांगे। उसकी प्यास मर गई। वह धीरे-धीरे अपने गांव की ओर चला। वह साहस करके अपने गांव पहुंचा और खा-पीकर अपने जी को सन्तुष्ट किया।

कुछ महीनों में ही बिसाऊ इस घटना को भूल गया। वह नित्य जंगल जाता और शिकार करता। उसकी जिंदगी पहले की तरह व्यस्त हो गई।

एक दिन की बात है। शहर का वही अंग्रेज जंगल में शिकार खेलने गया। दुर्भाग्य की बात कि उसे कोई शिकार नहीं मिला। वह सारा दिन जंगल में भटकता रहा। जब शाम हो गई तो उसे घर जाने की सुध आई। लेकिन काफी घूमने-फिरने के बाद भी वह जंगल से शहर की ओर जाने वाला रास्ता न खोज पाया। वह बड़ा परेशान हुआ। इस बीच अंधेरा भी घिरने लगा। काफी कोशिश करने के बाद भी उसे रास्ता न मिला तो वह एक ओर चलने लगा। वह रास्ता बिसाऊ के गांव की ओर जा रहा था। जंगल से बाहर निकल गांव देखा तो अंग्रेज ने राहत की सांस ली। वह तो यह सोचे बैठा था कि रात कहीं जंगल में ही गुजारनी पड़ेगी। उसने निश्चय किया कि वह रात-भर यहीं रहेगा और सुबह होते ही शहर की ओर चल देगा।

गांव में चारों ओर काले-काले आदमियों को देखकर उसकी रूह कांपने लगी। लेकिन मरता क्या नहीं करता? वह एक झोंपड़ी के सामने जा खड़ा हुआ। वह बिसाऊ की झोंपड़ी ही थी। उसने बाहर किसीकी आहट सुनी तो वह बाहर निकल आया। बाहर एक अंग्रेज को देखकर उसे एकाएक पुरानी घटना याद हो आई। उसने तत्काल ही उसे पहचान लिया। पर अंग्रेज उसे पहचान न पाया था।

अंग्रेज ने उसे देखकर नम्र भाव से कहा, 'भाई, आज रात-भर मुझे यहीं रह लेने दो। सुबह होते ही मैं शहर चला जाऊंगा। अगर कोई आपत्ति होतो मुझे शहर का रास्ता बता दो, मैं चला जाऊंगा।'

बिसाऊ बोला, 'साहब इतनी रात गए बाहर जाना खतरे से खाली नहीं।

रास्ते में जंगल पड़ते हैं, जिनमें भयंकर जानवर हैं। आप आराम से रात-भर मेरे यहां रहिए, सुबह मैं आपको शहर पहुंचा दूंगा।'

अंग्रेज बड़ा खुश हुआ। वह झोंपड़ी के अन्दर आ गया। बिसाऊ ने कहा, 'अब आप बेफिक्र हो जाइए। मेरे घर में जो रूखा-सूखा बना है, उसे खाइए और सो जाइए।'

अंग्रेज को भूख तो लगी ही थी। इन्कार करने का क्या सवाल था। उसने जल्दी ही हामी भर दी। दोनों ने मिलकर रूखा-सूखा खाया। भूख में यह भोजन भी अंग्रेज को अच्छे-भले पकवानों से कम नहीं लगा। बिसाऊ ने उसे प्यार से खिलाया-पिलाया और अपने बिस्तर पर सुला दिया। अंग्रेज थकावट के कारण गहरी नींद में निमग्न हो गया।

सुबह हुई तो अंग्रेज ने बिसाऊ को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और शहर का रास्ता पूछा।

बिसाऊ ने कहा, 'चलिए मैं आपको छोड़ आता हूं।'

वह अंग्रेज को लेकर शहर चला।

जब अंग्रेज की कोठी आ गई तो बिसाऊ बोला, 'अब मुझे आज्ञा दीजिए।'

'यह कैसे हो सकता है? तुमने मेरा इतना आदर-सत्कार किया, मैं तुम्हें यों ही जाने नहीं दूंगा। आओ, मेरे साथ थोड़ा नाश्ता खाकर चले जाना।' अंग्रेज ने आग्रह के साथ कहा।

बिसाऊ मन-ही-मन मुस्कराया। बोला, 'साहब, आप मेरे सत्कार के बदले में मेरा सत्कार करना चाहते हैं, यह ठीक नहीं है।'

'क्या मतलब?' अंग्रेज की समझ में बात नहीं आई।

'जी, सच्चा सत्कार तो वही है, जब जरूरतमंद के लिए कुछ किया जाए।'

'खुलासा कहो। मैं तुम्हारी पहेलियां समझ नहीं पा रहा हूं।'

'साहब, एक दिन मैं यहां पानी मांगने आया था, पर आपने मुझे ठुकरा दिया था। अगर मैं भी रात को अपनी झोंपड़ी से आपको ठुकरा देता तो भला क्या वह

अच्छा रहता ? हमेशा जरूरतमंद की मदद करनी चाहिए, क्योंकि कभी हमें भी मदद की जरूरत पड़ सकती है। दुनिया के लोग एक-दूसरे की मदद के बल पर ही जिंदा रह सकते हैं।

इतना कहकर बिसाऊ चला गया।

अंग्रेज को अपनी भूल पर बेहद अफसोस हुआ।

●●









